सफलता की कहानी रेवन्तराम की जुबानी

बीकानेर जिले के रायसर गांव के रहने वाले प्रगतिशील व सफल बकरी पालक रेवन्तराम मेघवाल (55) अपने बचपन से बकरी व भेड चराने का कार्य करते रहे हैं। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। जिसकी वजह से गांव के दूसरे लोगों की बकरी व भेड चराने का कार्य करते थे। आज से 9 वर्ष पहले रायसर गांव में वेटेनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना के प्रशिक्षण केम्प में रेवन्तराम आये और परियोजना से प्रभावित हो कर बकरी पालन को ही अपना व्यवसाय बनाने की ठान ली। रेवन्तराम ने अपने ऊंट व गाडा बेच कर 28 मारवाड़ी नस्ल की बकरियां खरीदी। परियोजना के रजिस्टर्ड मेम्बर बने।

परियोजना की ओर से उन्हे मारवाड़ी नस्ल का बकरा दिया गया। आज उनके पास मारवाड़ी नस्ल की 80 बकरियां है और मारवाड़ी नस्ल के बकरे परियोजना की तरफ से दिये गये हैं। रेवन्तराम परियोजना की तरफ से प्रशिक्षण शिविर में समय–समय पर बकरी पालन के बारे में जानकारी लेते रहते हैं और कृमि नाशक दवा व टीकाकरण भी समय–समय पर करवाते रहते हैं। रेवन्तराम के पास जो 28 बीघा असिंचित (बिरानी) जो कि कृषि जमीन है, उस पर खेती नहीं करके बकरी पालन का काम करते हैं। उसमें 68 खेजड़ी के पेड़ हैं, 30 बेर के पेड़ है। इन पेडो को वर्ष में एक बार कटिंग (छांगते) करते हैं। खेजड़ी व बेर के पत्तियां बकरियों का पसंदीदा भोजन है। जो वर्ष भर का एक बार में इकठ्ठा कर लेते हैं। इस चारे से बकरियां स्वस्थ रहती है। बकरियों को रखने के लिए आधुनिक तरह के बाड़े व शेड बना रखे हैं। साफ पानी के लिए खालीयां बना रखी है। बकरी पालन व साफ सफाई में उनका पूरा परिवार साथ देता है। रेवन्तराम बकरियों के बालों से चारपाई, बोरे (थैले), दरी, गलीचे आदि बना रखे हैं। रेवन्तराम बताता है कि परियोजना से जुड़ने से उसे काफी लाभ हुआ है। बकरियों की मृत्यु दर मे काफी गिरावट आयी। जिसकी वजह से आय भी बढी। वर्ष भर में 100 से 150 के बीच बकरियां व बकरे बेच कर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। रेवन्तराम ने अजोला फार्मिंग करने में रूचि दिखलाई है। रेवन्तराम के बच्चे आज अच्छी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। और गांव वालों के लिए प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं।